بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 8 नवम्बर 2024, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

तहरीके जदीद के नव्वेवें साल के दौरान जमाअत के लोगों की ओर से पेश किए जाने वाले आर्थिक बलिदानों का वर्णन तथा इक्यान्वेवें साल के प्रारम्भ होने की घोषणा।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 08.11.24

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

اَلَّذِیۡنَ یُنۡفِقُوۡنَ اَمۡوَالَہُمۡ بِالَّیۡلِ وَالنَّہَارِ سِرًّا وَّعَلَانِیَۃً فَلَہُمۡ اَجۡرُہُمۡ عِنۡدَ رَبِّہِمۡ ۚ وَلَا خَوۡفٌ عَلَیۡہِمۡ وَلَا ہُمۡ یَحۡزَنُوۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सूरः अलबक़रः की आयत 275 की तिलावत फ़रमाई जिसका अनुवाद यह है- वे लोग जो अपना धन ख़र्च करते हैं रात को भी और दिन को भी, छुप कर भी तथा खुले रूप में भी, उनके लिए उनका बदला उनके रब के पास है और उनके लिए कोई भय नहीं होगा तथा न ही वे दुखी होंगे।

आगे फ़र्माया- अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अहमदिय्या जमाअत अल्लाह तआला के इस आदेश के अनुसार धन की क़ुरबानियों में अत्यधिक बढ़ चढ़ कर अपने आपको पेश करने वाली है। जमाअत के विभिन्न चंदे हैं, अनिवार्य चन्दे हैं, चंदा ए आम, चन्दा वासिय्यत इत्यादि, फिर तहरीके जदीद और वक्फ़े जदीद की तहरीकें हैं, हर जगह जहाँ भी ज़रुरत पड़े अहमदिय्या जमाअत के लोग श्रद्धा एवं निष्ठा के साथ बढ़ चढ़ कर धन के बलिदान में सहयोग करते हैं और छुप कर भी तथा सार्वजानिक रूप में भी क़ुरबानियाँ कर रहे होते हैं, बिना इस भय के कि इन्हें कोई धन की तंगी हो जाए।

अहमदिया जमाअत में अधिकांश लोग तो कम आय तथा मध्यम आय वाले लोगों की है परन्तु विशेष बलिदान करने वाले भी लोग हैं और कभी इस बात को प्रकट नहीं करते कि जमाअत

ने इतनी अधिक तेहरीकें शुरू की हुई हैं, हमारी आमदनी सीमित है, कहाँ से दें, बल्कि एक दिली जोश एवं भावना के साथ ये क़ुरबानियाँ देते हैं। मुझे पता है कुछ लोग ऐसे हैं कि बहुत बड़ी क़ुरबानी करके भी, बल्कि यह कहना चाहिए कि अपना पेट काटकर, अपनी ख़ुराक कम करके, अपने बच्चों के ख़र्चे कम करके ये क़ुरबानियाँ देते हैं तथा इनको कभी ख़याल नहीं आया अथवा इन्होने कभी यह अभिव्यक्त नहीं किया कि हमारी ये क़ुरबानियाँ हैं और हम पर क्यूं इतना बोझ डाला जा रहा है? हमें भी अमुक काम के लिए आवश्यकता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु ने जब तहरीके जदीद की तहरीक जारी फ़रमाई तो आप रज़ी ने सादह जीवन का मुतालबा किया था और आप रज़ी ने फ़रमाया था सादह जीवन व्यतीत करके अपने पैसे जोड़ो तथा उसके हिसाब से ख़र्च करो और इसके परिणाम स्वरूप कुछ लोग ऐसे हैं जो ख़ुद सादह से सादह जीवन व्यतीत करते हैं और बड़ी बड़ी धन राशियाँ क़ुर्बान करते हैं। प्रत्यक्षतः उनकी दशा देख कर लगता है कि वे इतनी बड़ी धन राशि नहीं दे सकते किन्तु हज़ारों डालरों, पौंडों या हज़ारों यूरो में कुर्बानियां दे रहे होते हैं। इस भौतिक जगत में इन देशों में रहकर इतनी क़ुर्बानी करना बहुत बड़ी बात है और जो निर्धन देश हैं, पाकिस्तान है, हिंदुस्तान है अथवा अफ़्रीक़ा के देश हैं, वहां तो अहमदियों की आय के साधन दुर्लभ हैं तथा अति कठिनाई से लोगों की जीवन चर्या चलती है। फिर भी क़ुर्बानियाँ देते चले जा रहे हैं और अल्लाह तआला की प्रशंसा पाने के लिए छुप कर भी तथा खुले रूप में भी ख़र्च करते हैं। अतएव ये वे लोग हैं जो वास्तविक मोमिन हैं और अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने वाले हैं। कुछ लोग ऐसे हैं जब कोई भी तहरीक की जाए अथवा जब तहरीके जदीद या वक्फ़ जदीद की घोषणा होती है तो ऋण लेकर भी अदा कर देते हैं। जबकि आवश्यक नहीं है कि ऋण लेकर चंदा दें। कोई भय नहीं इनको होता, इनको पता है कि अल्लाह तआला की राह में ख़र्च कर रहे हैं तो अल्लाह तआला ख़ुद ही पूरा भी कर देगा।

अतः अहमदिया जमाअत को अल्लाह तआला ने बहुत बड़े बड़े क़ुरबानी करने वाले प्रदान किए हैं, अन्य लोगों कि तरह ये नहीं हैं कि पाँच दस रुपए देकर फिर सौ बार मस्जिद में घोषणा करवाएं। ऐसी अनेक घटनाएँ मेरे सामने आती हैं जहाँ लोग बढ़ चढ़ कर कुर्बानियां देने के लिए अपने आपको पेश करते हैं, इसमें अफ़्रीक़ा के देश भी शामिल हैं, योरूप के देश भी शामिल हैं, एशिया के देश भी शामिल हैं। निर्धन लोग तो बहुत बड़ी क़ुरबानी करके चंदे देते हैं, यद्यपि उनकी कुर्बानियां प्रत्यक्षतः आर्थिक दृष्टि से बहुत छोटी होती हैं, धन राशि मात्रा की दृष्टि से, परन्तु महत्त्व की दृष्टि से अल्लाह तआला की नज़र में बहुत बड़ी कुर्बानियां हैं, और यह रूह दूर सुदूर रहने वाले निर्धन देशों के लोगों में भी है कि धन का बलिदान करने से अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के साथ अल्लाह तआला उन्हें हर प्रकार के भय से भी दूर रखता है और उनकी आवश्यकताओं को भी पूरा करता है।

उदाहरण के रूप में जर्मनी की जमाअत रोडगाओ के सदर कहते हैं कि कुछ वक्फ़ ज़िन्दगी लोगों ने अपने एक महीने का अलाउंस जमाअत को देने का ऐलान किया, जिसने दूसरे लोगों को

भी बड़ी कुर्बानियों की ओर प्रेरित किया। एक साहब ने इसी तहरीक में बड़ी रक़म चन्दे में दी, और अगले साल अपने वादे को दोगुना से भी अधिक कर दिया। इस बलिदान की भावना ने उनके जीवन में सादगी तथा बचत का रंग भर दिया, यहाँ तक कि सादा लिबास और सादा जीवन धारण कर लिया। सेक्रेट्री माल कहते हैं कि उनकी ज़ाहिरी स्थिति से अनुमान नहीं लगाया जा सकता कि वे इतनी बड़ी क़ुरबानी कर रहे हैं।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इस पर मुझे एक पुरानी घटना याद आ गई कि कराची में हमारे एक बजुर्ग दोस्त शेख़ मजीद साहब थे। वे बहुत बड़ी बड़ी धन राशि की कुर्बानियां किया करते थे और अपने घर के ख़र्चों के लिए रक़म रख कर शेष समस्त तहरीकों में बढ़ चढ़ कर भाग लिया करते थे। वे यही कहा करते थे कि मैं तो जो कारोबार करता हूँ, वह तो करता ही जमाअत के लिए हूँ।

क़ादियान के वकीलुल माल लिखते हैं कि एक साहब हैं केरला के, वे कहते हैं अति कठिन परिस्थितियाँ थीं मेरी, कोई काम नहीं मिल रहा था। अन्तः मैंने सोचा कि और तो कुछ नहीं कपड़े का काम शुरू करता हूँ और फुटपाथ पर ही एक मेज़ लगा कर काम शुरू कर दिया और चंदे को यथावत रूप से अदा करना शुरू कर दिया। जो भी आय होती थी, अल्लाह के फ़ज़ल से उसमें बड़ी बरकत पड़ी, और कहते हैं अब मैं बड़ी बड़ी रक़में चन्दे में देता हूँ। कारोबार भी फैल गया दो तीन साल में। ये कहते हैं अल्लाह तआला के लिए जो मैंने क़ुरबानी की, चन्दे नियमानुसार देता था, उसका परिणाम यह है कि मेरे कारोबार में बरकत पड़ी। दूसरे लोगों की आर्थिक स्थिति बिगड़ रही थी, हालात के कारण, किन्तु कहते हैं मुझे तो लाभ ही होता चला गया। अब उनकी अपनी बड़ी बड़ी दुकानें हैं। कहाँ फुटपाथ में एक ठेला लगाया होता था, मेज़ रखी होती थी, अब दुकानें हैं बड़ी बड़ी और शोरूम भी है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अब लाखों में चंदा अदा करते हैं वे, इसी साल उन्होंने तहरीके जदीद में भी दस लाख रुपए अदा किए।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि अब यही नहीं कि ग़रीब देशों की बात है, जो ईमान के मज़बूत लोग हैं वे हर जगह ये नज़ारे देखते हैं जो शुद्ध धारणा से अल्लाह तआला के लिए बलिदान देना चाहते हैं और देते रहते हैं, वे नज़ारे देखते हैं। अल्लाह तआला उनको ये नज़ारे दिखा कर चाहे वे धनवान देशों में रहने वाले हैं अथवा निर्धन देशों के रहने वाले हैं, उनके दीन को मज़बूत करने के साधन पैदा फ़रमाता है, उनके ईमान को सुदृढ़ फ़रमाता है। इस तरह की अनेक घटनाएँ हैं जो अल्लाह तआला लोगों के ईमान मज़बूत करने के लिए दिखता रहता है और इसके बाद इसको देख कर फिर दूसरों को भी जब पता लगता है तो उनमें भी क़ुरबानी की रूह पैदा होती है।

इसके बाद हुज़ूरे अनवर ने गत वर्ष के आंकड़ों का वर्णन फ़रमाया और तहरीक ए जदीद के नए साल का ऐलान फ़रमाया।

हुज़ूरे अनवर ने तहरीक ए जदीद के नव्वे वें वर्ष के आंकड़े बयान करते हुए फ़रमाया कि अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत को 17.98 मिलयन पाउंड की क़ुर्बानी पेश करने की तौफ़ीक़ मिली, अलहम्दुलिल्लाह, जो पिछले साल की तुलना में सात लाख उनासी हज़ार पाउंड अधिक है।

समूहिक वसूली कि दृष्टि से पहली दस जमातें- जर्मनी, बर्तानिया, अमरीका, केनेडा, मिडिल ईस्ट की एक जमात, भारत, आस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, मिडिल ईस्ट की एक जमाअत और घाना।

प्रतिव्यक्ति अदाएगी की दृष्टि से- अमरीका, स्विज़रलैंड, बर्तानिया, केनेडा तथा आस्ट्रेलिया।

अन्य विशेष जमातें- बंगला देश, नाइजेरिया, हालैंड, आस्ट्रिया, फ़्रांस, स्विज़रलैंड, आयरलैंड, मिडिल ईस्ट की एक जमाअत। हुज़ूरे अनवर ने इस अवसर पर बंगला देश कि जमाअत के लिए दुआ की तहरीक भी फ़रमाई।

तहरीक ए जदीद में शामिल होने वाले लोगों कि संख्या सोलह लाख इक्यासी हज़ार है। सामूहिक रूप से क़ुर्बानी करने वालों की संख्या में गत वर्ष की तुलना में पचास हज़ार की वृद्धि हुई है। वृद्धि करने वाले देशों में विशेष रूप से देशों के नाम- नाईजेरिया, कांगो, ब्राज़वेल, नाइजर, गेम्बिया, कांगो कंशासा, कैमरोन, गिनी कनाकरी, गिनी बसाओ, योगेंडा, सिरालियोन।

इन्डिया के दस प्रदेश- केरला, तमिलनाडू, तिलंगाना, ओडिशा, कर्नाटक, जम्मू एंड कश्मीर, पंजाब, बंगाल, महाराष्ट्र तथा देहली।

इन्डिया की पहली दस जमाअतें- हैद्राबाद, क़ादियान, कालीकट, कोइम्बटूर, मंजेरी, मेला पालियम, बंगलौर, कलकत्ता, केरंग, करुलाई।

हुज़ूरे अनवर ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इरशाद पेश करने के बाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला करे कि हम लोग मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इच्छाओं के अनुसार कुर्बानियों में बढ़ने वाले हों, धन के बलिदान में भी और अपनी रूहानी हालतों को बेहतर करते चले जाने वाले भी हों, अपने सम्बन्ध को अल्लाह तआला से बढ़ाने वाले भी हों, और केवल धन कि कुर्बानियों में ही नहीं बल्कि हर एक हालत में हम अपना वह अमली नमूना पेश करें जो एक वास्तविक मुसलमान का नमूना है, और जब यह होगा तो हम जमाअत कि उन्नतियों को भी देखेंगे और पहले से बढ़ कर हम सफलताएँ देखते चले जाएंगे, इन्शाल्लाह, अल्लाह तआला के फ़ज़लों को देखते चले जाएंगे तथा दुश्मन को असफल एवं निराश होता देखते चले जाएंगे। अल्लाह तआला वह दिन भी जल्द लाए कि हम ये दिन भी देखें। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इन सब लोगों ने, जिन्होंने धन कि कुर्बानियां की हैं, अल्लाह तआला इनको जज़ा दे, इनके माल और जान में बरकत डाले और भविष्य में ये सदेव बेहतर रंग में अपने जीवन व्यतीत करने वाले हों, अपनी संतानों से, अपनी पीढ़ियों से आँखों की ठंडक पाने वाले हों और ख़ुद भी अल्लाह तआला की निकटता में बढ़ते चले जाने वाले हों। अल्लाह करे कि ऐसा ही हो, आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, संपर्क अनुवादक–9781831652

टोल फ्री नंबर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पंजाब–18001032131